(**अभितः परितः समयानिकषा हा प्रतियोगेऽपि वा०**) अभितः (चारों ओर) परितः (सब ओर) समया, निकषा (समीप) हा, प्रति (ओर तरफ) के साथ द्वितीया विभक्ति होती है। यथा-

(अभितः) परिजनः राजानम् अभितः तस्थौ (नौकर राजा के चारों ओर खड़े थे।)

(निकषा, समया) वनं निकषा (समया वा) सरसी वर्तते (वन के समीप एक तालाब है।)

(प्रति ) दीनं प्रति दयां कुरु ( दीन पर दया करो)।

(हा) हा नास्तकं य ईश्वर न मन्यते (नास्तिक पर अफसोस है कि वह ईश्वर को नहीं मानता।)

**गत्यर्थकर्मणि द्वितीयचतुर्थ्यौ चेष्टायामध्वनि**

गत्यर्थक धातुओं (गम्, चल , या इण ) का कर्म जब मार्ग नहीं रहता है तब चतुर्थी और द्वितीया होती है, यथा-गृहं गृहाय वा गच्छति–यहाँ जाने में हाथ, पैर आदि अंगों का हिलना-डुलना रहा और गृह मार्ग नहीं है। मार्ग में द्वितीया होती है—पन्थानं गच्छति । शरीर के व्यापार न करने पर-चेतसा हरिं व्रजति (केवल द्वितीया)।

**अधिशीङ्स्थासां कर्म**

"शी, स्था, तथा आस् धातुओं के पूर्व यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं का आधार कर्म कहलाता है, यथा-भूपतिः सिंहासनम् अध्यास्ते (राजा सिंहासन पर बैठा है)।

शिष्यः आसनम् अधितिष्ठति (शिष्य आसान पर बैठता है)

चन्द्रापीडः मुक्ताशिलापट्टम् अधिशिश्ये (चन्द्रापीड मुक्ताशिला पर लेट गया)

**उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।**
**द्वितीया मेड्रितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।।**

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अध्यधि शब्दों की जिससे सनिकटता पायी जाती है उसमें द्वितीया होती है, यथा-

उभयतः नदीं वृक्षाः ( नदी के दोनों ओर पेड़ है।)

सर्वतः कृष्णं गोपाः ( कृष्ण के सभी ओर ग्वाले हैं।)

(धिक्) धिक् पिशुनम् (चुगुलखोर को धिक्कार है।)

(उपर्युपरि) उपर्युपरि लोकं हरिः ( हरि लोक के ठीक ऊपर है।)

(अधोऽधः) अधोऽधः लोकं पातालः (ठीक नीचे पाताल लोक है।)

(अध्यधि) अध्यधि लोकम् (संसार के ठीक नीचे )।

(ऋते ) न कृष्णम् ऋते कोऽपि कंसं हन्तुं समर्थः ( कृष्ण के बिना कोई कंस को नहीं मार सकता)।

**कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे**

समय और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया होती है, यदि अन्त तक पूरे काल या मार्ग का ज्ञान हो, यथा- रमेशः पञ्च वर्षाणि अधिजगे (रमेश ने पूरे पाँच वर्षों तक पढ़ा)

**एनपा द्वितीया**

एनप् प्रत्ययान्त शब्द की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उस में द्वितीया या षष्ठी होती है, जैसे- नगरं नगरस्य वा दक्षिणेन ( नगर के दक्षिण की ओर)।

उत्तरेण यमुनाम् ( यमुना के उत्तर )।

तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् ( वहां पर कुबेर के महल के उत्तर में मेरा घर है)।

**द्विकर्मक धातुएँ –**

दुह्याच् पच् दण्ड् रुधि प्रच्छि चि ब्रू शासु जिमन्थमुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यानीहृकृष्वहाम्॥

"गोपः गां पयः दोग्धि" (ग्वाला गौ से दूध दुहता है।) गौ से' का अनुवाद पञ्चमी विभक्ति (गोः) से होना चाहिए था। किन्तु दुह् धातु के प्रयोग होने से पञ्चमी न हो कर द्वितीया (गाम् ) हो जाती है।

निम्न १६ धातुएं तथा इनके अर्थ वाली धातुएँ द्विकर्म हैं -

१-दुह् -"गोपः गां दोग्धि पयः" (ग्वाला गाय से दूध दहता है ) इस अर्थ में साधारणतया अपादान कारक होता है, अतः इस में पञ्चमी विभक्ति (गोः) होनी चाहिए: परन्तु यहाँ पर 'गाय' दूध के निमित्त मात्र के लिए गृहीत है, अवधिरूप में नहीं। इसलिए उपर्युक्त नियमानुसार गाय की कर्म संज्ञा हुई। अभिप्राय यह निकला कि पयः कर्मक गोसम्बन्धी दोहन व्यापार हुआ। यदि अपादान की विशेष विवक्षा होगी तो 'गोपालः गोर्दोग्धि पयः' ऐसा ही प्रयोग होगा। इसी भाँति याच् आदि क्रियाओं के साथ द्विकमक का सम्बन्ध जानना चाहिए।

२-याच (माँगना) दरिद्रः राजानं वस्त्रं याचते ( दरिद्र राजा से कपडा माँगता है)।

३–पच् (पकाना) सः तण्डुलान् ओदनं पचति (वह चावलों से भात पकाता है)।

४-दण्ड (सजा देना) राजा चौरं शतं दण्डयति (राजा चोर को सौ रुपये जुर्माना करता है)।

५-रुध् (घेरना) व्रजमवरुणद्धि गाम् ( गाय को व्रज में घेरता है)।